“कोई भी उनसे जुड़ने की हिम्मत नहीं करता था”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

मुख्य श्लोक:

“बाकी लोग उनसे जुड़ने की हिम्मत नहीं करते थे, लेकिन लोग

उन्हें बड़ा सम्मान देते थे।”

प्रेरितों के काम 5:13 (ERV-HI)

1. प्रसंग: प्रारंभिक चर्च की शक्ति और पवित्रता
प्रेरितों के काम 5:12–16 में, प्रारंभिक चर्च तीव्र गति से बढ़ रहा है, और इसके साथ चमत्कार और अद्भुत घटनाएँ भी हो रही हैं। प्रेरित न केवल साहसपूर्वक सुसमाचार प्रचार कर रहे हैं, बल्कि बीमारों को चंगा कर रहे हैं और बुरे
आत्माओं को निकाल रहे हैं। ये घटनाएँ अनन्य और सफ़ीरा की कहानी के बाद होती
हैं (प्रेरितों के काम 5:1–11), जिन्होंने भगवान के सामने झूठ बोला था और तत्काल मृत्यु हो गई। सम्पूर्ण समुदाय में परमेश्वर का भय छा गया (पद 11), और पवित्रता का मानक स्पष्ट रूप से उच्च था।

“प्रेरितों के हाथों से लोगों के बीच कई चमत्कार और आश्चर्य

होते रहते थे। और सब सोलोमन के स्तंभमंडल में एक साथ थे।”

प्रेरितों के काम 5:12 (ERV-HI)

2. परमेश्वर का भय और शिष्यत्व की कीमत
“कोई भी उनसे जुड़ने की हिम्मत नहीं करता था” यह बताता है कि बाहरी लोग प्रेरितों की समुदाय को कितनी श्रद्धा और भय के साथ देखते थे। यद्यपि लोग उन्हें सम्मान देते थे, वे शिष्यत्व की कठिनाइयों के कारण उनसे निकट जुड़ने में हिचक रहे थे। यह भय आध्यात्मिक था (जैसा कि अनन्य और सफ़ीरा के उदाहरण से पता चलता है) और सामाजिक था (यहूदी अधिकारियों से उत्पीड़न का डर)।

“कोई भी उनसे जुड़ने की हिम्मत नहीं करता था”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

“बाकी लोग उनसे जुड़ने की हिम्मत नहीं करते थे, हालाँकि वे लोगों के बीच बहुत सम्मानित थे।”
प्रेरितों के काम 5:13 (ERV-HI)

इस तरह का हिचक “शिष्यत्व की कीमत” के रूप में जाना जाता है, जैसा कि डिटरिच बॉन्होफर ने कहा था। यीशु का अनुसरण करना कोई साधारण निर्णय नहीं था; यह पूर्ण समर्पण की मांग करता था, यहां तक कि मृत्यु तक। प्रेरित persecution, कैद और बलिदान से भी नहीं डरे (देखें प्रेरितों के काम 5:40-42, 7:54-60)।

3. प्रेरितों का आदर्श: विरोध के सामने साहस
प्रेरित पीछे नहीं हटे और न ही समझौता किया। वे खुलेआम यरूशलेम में सेवा जारी रखे, यहां तक कि उन्हीं मंदिर प्रांगणों में जहां यीशु ने धार्मिक व्यवस्था को चुनौती दी थी और जहां उन्हें खुद गिरफ्तार किया गया था।

“परन्तु रात में प्रभु के एक स्वर्गदूत ने जेल के दरवाजे
खोल दिए और उन्हें बाहर निकाल कर कहा, ‘जाओ, मंदिर के भीतर
खड़े हो जाओ और लोगों को इस जीवन के सारे शब्द सुनाओ।’” प्रेरितों के काम 5:19–20 (ERV-HI)

सभी खतरों के बावजूद, वे मनुष्यों से अधिक परमेश्वर की आज्ञा

“कोई भी उनसे जुड़ने की हिम्मत नहीं करता था”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

मानते थे (प्रेरितों के काम 5:29)। उनका जीवन पूरी तरह से आज्ञाकारिता का उदाहरण था, जो प्रेरितों के काम में बार-बार दिखता है (जैसे प्रेरितों के काम 4:19-20)।

4. सच्चा विश्वास दबाव में अक्सर चुप रहता है
यूहन्ना 12:42 में भी एक समान स्थिति दिखती है, जहाँ कुछ धार्मिक नेता यीशु पर विश्वास करते थे, लेकिन अपने स्थान को खोने के डर से खुलकर विश्वास प्रकट नहीं करते थे:

“बहुत से प्रमुखों में भी उस पर विश्वास किया करते थे,
परन्तु फरीसियों के कारण वे अपने विश्वास को खुलेआम
स्वीकार नहीं करते थे, कि वे सभा से न निकाले जाएं।”
यूहन्ना 12:42 (ERV-HI)

यह तुलना प्रेरितों के काम 5:13 को समझाने में मदद करती है: प्रेरितों की प्रशंसा करने वालों में भी, कई सार्वजनिक रूप से उनसे जुड़ने का जोखिम नहीं उठा सके।

5. प्रेरित रहते हैं, जब अन्य बिखर जाते हैं
जब यरूशलेम में उत्पीड़न शुरू हुआ, तो विश्वासियों ने सुरक्षा के लिए बिखराव किया, लेकिन प्रेरित नहीं। वे संघर्ष के केंद्र में बने रहे और अपने मिशन में अडिग रहे।

“यरूशलेम में चर्च पर बड़ा उत्पीड़न हुआ, और प्रेरितों के

“कोई भी उनसे जुड़ने की हिम्मत नहीं करता था”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

अलावा सब यहूदा और समरिया के इलाकों में बिखर गए।”
प्रेरितों के काम 8:1 (ERV-HI)

उनकी अडिग प्रतिबद्धता उनके विश्वास और बुलावे की गहराई दर्शाती है, जो प्रशंसा से कहीं अधिक है। यही शिष्यत्व की सबसे बड़ी कीमत है।

6. आधुनिक परमेश्वर के सेवकों के लिए शिक्षा
सैद्धांतिक रूप से, प्रेरितों के काम 5:13 पवित्रता, साहस और गहरे समर्पण का एक शक्तिशाली आह्वान है। जिन्हें सेवा के लिए बुलाया गया है, उन्हें बिना समझौता किए आज्ञाकारिता का जीवन जीना होगा, चाहे वह अस्वीकृति या खतरे से भरा हो। लोग दूर से साहसिक विश्वास की प्रशंसा कर सकते हैं, लेकिन बहुत कम लोग उस संकरे रास्ते पर चलने को तैयार होते हैं (मत्ती 7:13-14 देखें)।

सच्ची सेवा उच्च स्तर की स्व-त्याग और समर्पण मांगती है:

“तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, ‘यदि कोई मुझसे पीछे आना
चाहता है, तो वह स्वयं को त्याग दे, अपना क्रूस उठाए और मेरा अनुसरण करे।’”
मत्ती 16:24 (ERV-HI)

साहस और समर्पण का आह्वान
परमेश्वर उन लोगों का उपयोग करता है जो गहराई में जाने को तैयार

“कोई भी उनसे जुड़ने की हिम्मत नहीं करता था”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

होते हैं, जो भागने के बजाय ठहरते हैं, जो चुप्पी के बजाय बोलते हैं, और जो गिरने के बजाय टिके रहते हैं। यही बात प्रेरितों को अलग बनाती थी, और आज हर सच्चे परमेश्वर के सेवक को अलग करेगी।

हम उन लोगों में गिने जाएं जो केवल प्रशंसा ही नहीं करते, बल्कि हर कीमत पर अनुसरण करते हैं।

शालोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp